अध्याय - 2

गिरिजाकुमार माथुर - जीवनवृत्त, व्यक्तित्व और कृतित्व

जन्म तथा जन्म स्थान :-

कविवर गिरिजाकुमार माथरजी का जन्म भाद्रपद कृष्ण द्वादशी, शुक्रवार सम्वत 1976 तथा सन 12 अगस्त 1919 में अशोक नगर (मध्य प्रदेश) के एक मध्यवर्गीय परिवार में हुआ।

बाल्यकाल :-

गिरिजाकुमार माथुरजी का जन्म मध्यवर्गीय में होने के कारण उनका बाल्यकाल वैसे मध्यवर्गीय था जिसका वर्णन हम ऐसा कर सकते है -

" टूटे खपरैल, सीले गलियारे, घुप्प अँधेरा, एकदम सूनसा सूनसान। " परिवेश और उदासी यह उनके बचपन का वातावरण था। जिसका प्रभाव माथुरजी के काव्यपर पडा है।

संस्कार :-

माथुरजी मध्यवर्गीय होने के बावजूद भी माथुर साहब के घर में शिक्षा का सुसंस्कृत वातावरण था। काव्य और संगीत के प्रति प्रेम माथुर साहब हो पैतृक संस्कार के रूप में प्राप्त हुआ है। उनकी माताजी काव्य और संगीत में रुचि रखनेवाली प्रतिभा संपन्न महिला थी। पिता भी अच्छे संगीततज्ञ थे। घर में प्राप्त पौराणिक ग्रंथों, साहित्यिक पुस्तकों और विभिन्न पत्र पत्रिकाओं के अध्ययन द्वारा उनकी काव्य रुचि अधिकाधिक विकसित होती गई।

शिक्षा :-

माथुरजी अशोक नगर से सन 1932 में मिडिल पास करके झाँसी में दाखिल हुए। विक्टोरिया कॉलेज (ग्वालियर) से बी.ए. किया। सन 1937 में उन्हों ने अंग्रेजी लेकर एम.ए. किय, एम.ए. के बाद उन्होंने एल.एल.बी. किया।

विवाह :-

माथुर साहब ने 1939 में हिंदी की विदुषी शकुन्त माथुर से विवाह किया जो एक स्वतंत्र विचारोंवाली कवयित्री भी हैं जिनकी कविताएँ तारसप्तक तीसरा में संकलित है।

आजीविका :-

गिरिजाकुमार माथुर मध्यवर्गीय होने के कारण उन्हें अपनी आजीविका करने के लिए पहले पहल बहुत मेहनत उठानी पडी, सन 1943 में ऑप ऑल इंडिया रेडियों में नियुक्त हूए। तो 1950 में रेडिओ से त्यागपत्र देकर संयुक्त राष्ट्र संघ न्यूयार्क में सूचनाधिकारी का पद भार सँभाला। 1953 में आकाशवाणी लखनऊ में उपनिदेशक हो गये। सन 1956 में आप ने सांस्कृतिक शिष्ट मंडल में नेपाल की यात्रा की। इसके बाद आप 1956 में ही आकाशवाणी प्रतिनिधि मंडल में रूस तथा चेकास्लोवाकिया की यात्रा पर गये। स्विटजरलैंड का भी भ्रमण किया। तदन्तर भोपाल, इलाहाबाद, दिल्ली, उडीसा में प्रवास रहा तब से भारतवर्ष के विभिन्न नगरों में रेडियो स्टेशनों पर कार्य करते रहे। 1978 में ऑप ऑल इंडिया रेडियो दिल्ली में डायरेक्टर रहें। अतः आप अपने निवास जनक पुरी, दिल्ली में काव्य की सृष्टि कर रहे है।

व्यक्तित्व :-

श्रीमती शकुन्त माथरजी के शब्दों में गिरीजाकुमार माथुर के व्यक्तित्व की झलक दिखायी देती है, " हँसता हुआ आकर्षक चेहरा खनकदार अनुगूँजवाली गहरी आवाज, आँखे जो बातें करते समय या कविता सुनाते समय अचानक न जाने कहाँ खो जाती है - जैसे दूर शून्यों में कोई अर्थ तलाश रही हो, फिर अचानक वहाँ से वापस आकर चमक जाती हैं। जहाँ पहुँच जाये वहाँ का वातावरण खिल जायें, हल्का हो जाये। चिर युवा मन, हर सुंदर चीज के प्रति आसक्त, ठहाकेदार, हँसी, गानों भीतरी आनंद को सुगंध की तरह बिखरकर बिखराकर ही जायेंगे। "

कवि माथुरजी का जीवन विविधताओं से भरा हुआ है। विविध स्थान, विविध परिस्थितियाँ एवं विविध विचार धाराओं के गहरे प्रभाव से कवि का व्यक्तित्व का निर्माण हुआ है। माथुरजीने ऐतिहासिक और भौगोलिक वातावरण का अनुभव मालवा बुंदेलखंड एवं ग्वालियर में रहकर प्राप्त किया। लखनऊ में रहकर वैभव, विलास एवं अभिजात्य संस्कार ग्रहण किए। दिल्ली के निवास से अपने नागरीय संस्कृति का बोध प्राप्त किया। तथा रूस, अमरिका और युरोप के विभिन्न देशों के भ्रमण से आपके हृदयपर आधुनिक बोध तथा वैज्ञानिक चेतना का गहरा प्रभाव पडा।

डॉ नगेंद्र ने माथुरजी के व्यक्तित्व के दूसरे पहलू की सराहना इसप्रकार की है,

" उनके व्यक्तित्व की संस्कार पीठिका, मानव की शतियों लम्बी ऐतिहासिक विभूतिगंध, बुंदेलखंड का अदम्य विद्रोह बोध, ग्वालियर के बीहड जंगलों का उद्दाम संगीत, लखनऊ की अभिजात

नफारात, गिठारा और रंगीनी दिल्ली की नगरीय संवेदना तथा अमेरिका, रूस आदि की अति आधुनिकता और वैज्ञानिकता से विनिर्मित है। " [1]

कवि माथुरजी के हृदय में एक और स्नेह की तरलता है, दूसरी और विद्रोह की आग, एक ओर त्रस्त और उत्पीडित मानवता के प्रति असीम करूणा है, दूसरी ओर अन्याय और शोषण के प्रति आक्रोश तथा एक और वर्तमान के प्रति खीझ है। दूसरी ओर भविष्य के प्रति आशा और विश्वास उनका व्यक्तित्व कुछ ऐसे विरोधी तत्वों से निर्मित है, जिसमें कुसुम की कोमलता दिखायी देती है, तो दूसरी ओर वज्रसी कठोरता का योग है। " [2]

साहित्य की प्रेरणा :-

आधुनिक बोध और नूतन काव्य संवेदनाओं के सफल कलाकार के रूप में गिरिजाकुमार 'तार-सप्तक' के कवियों में सबसे अलग दिखायी देते है। माथुरजी भारतवर्ष के उन जुझारू व्यक्तियों में से एक सशक्त हस्ताक्षर है, जिन्होंने जीवन को बहुत निकटता से यथार्थपरक दृष्टि से बिखरे हुए सूत्रों को एकत्रित किया है। उनकी ममतामयी माँ उनके जन्म के बाद ही गंभीर रूप से बीमार हो गई और तैतीस वर्ष तक चल-फिर सकने में असमर्थ रही। इस घटना ने कवि के मन पर यह प्रभाव छोडा कि 'दुःख' जीवन का आवश्यक अंग है।

इसप्रकार आपके मनपर काव्य संस्कार डालेने में आपकी जन्मभूमि अशोकनगर (बुंदेलखंड) का बडा हाथ रहा है। वहाँ के लाल पत्थर, उँचे-नीचे ठूह, छोटी-बडी टौरियाँ काली सौंधी मिट्टी, ढाक के बने जंगल, खजूरों के पेडों से आवृत्त नदी-नाले टेढे मेढे गली-गलियारे उथली-गहरी ताल-तलैयाँ विविध देवी-देवताओं के छोट-बडे मंदिर, स्मारक रूप में निर्मित छतरियाँ - मजार, सुनहरी संध्याये चाँदनी राते, धूल-कुडे भरे गाँव, कटीली झाडियाँ विक्रमादित्य, नल-दमयंती, भतृंहरि, एवं मोरध्वज की लोक कथायें आदि आपकी प्रेरणा-स्त्रोत रहें है।

कृतित्व :-

काव्य ग्रंथों का काल-क्रमानुसार परिचय

- गिरिजाकुमार माथुर 'तार-सप्तक' के एक सशक्त हस्ताक्षर है। आपने अपनी अनेक कृतियों द्वारा हिंदी साहित्य को समृद्ध और सशक्त किया है। आपकी बहुमुखी प्रतिभा के फलस्वरूप प्रयोगवादी धारा को विशेष बल मिला है और कविता के क्षेत्र में अनेक नये प्रयोग कर काव्य के भावपक्ष को और अधिक सामर्थ्यवान बनाया है। आपकी रचनाओं में एक

नवीन ताजगी और बाँकापन मिलता है।

गिरिजाकुमार माथुर के कृतित्व में रूप, रस, रोमान, मूर्त, मांसल, अनुभूति, स्वस्थ सुंदर रूपमें सामाजिक वैषम्य की पीडा, सुष्ठ तत्कालिन अन्याय, अत्याचार, शोपण, वीपमता, अर्थ सौंदर्य-क्षमता, माथुरजी के काव्य में आधुनिक शहरी संवेदना, नया रोमांस इतिहास की सांस्कृतिक दृष्टि और शिल्प का नया रूप है। विज्ञान चेतना भी उनके काव्य में कही-कही (यथा पूथ्वीकल्प में) दिखायी देती है।

अब तक दस काव्य संग्रह एक समीक्षा ग्रंथ तथा बिहारी सतसई के अंग्रेजी अनुवाद पर संपादित एक ग्रंथ ' The Veiled moon ' नाम से प्रकाशित हो चुके है।

काव्य प्रवृत्तियों और रचनाकाल के आधार पर माथुरजी का कृतित्व इस प्रकार है -

रचनाएँ :-

काव्यसंग्रह :-

'मंजीर' (1941), 'नाश और निर्माण' (1946), 'तार-सप्तक' में संग्रहीत (1943), 'धूप के धान' (1954), 'शिला पंख चमकील' (1961), 'छायागत छूनामन' (1961), 'जो बँध नहीं सका' (1968), 'भीतरी नदी की यात्रा' (1974), 'पृथ्वीकल्प' नाटयकाव्य (1961), 'मैं वक्ते के सागने हूँ' (1990), 'कल्पान्तर' (1983) विज्ञान काव्य।

नाटक :- जनमकैद (1957).

आलोचनात्मक ग्रंथ :-

नई कविता : सीमाएँ और संभावनाएँ (1966), इस पुस्तक में उनके मौलिक निबंध भी प्रसिद्ध है, जैसे नाद-सिद्धांत, सामाजिक परिवृत्त और नूतन भाव-बोध, मानवीय मूल्यों का परिप्रेक्ष्य आदि.

अनुवाद :-

' The Valied Moon 'डॉ. अमरनाथ झा द्वारा विहारी के दोहों के अंग्रेजी अनुवाद का संपादन : और आधुनिक हिंदी कविता पर अंग्रेजी में विस्तृत और मानक लेखन.

पुरस्कार :-

'कल्पांतर' नाटय काव्य पर चेकोस्लोवाक रेडिओ के अन्तर्राष्टीय पुरस्कार "LIDICE" द्वारा सम्मानित किया गया।

दिल्ली प्रशासनद्वारा विशेष साहित्यिक सागान एवं पुरस्कार. मै वक्त के सामने हूँ को साहित्य अकादमी का पुरस्कार मिला 1991.

मंजीर :-

सन 1941 में प्रकाशित 'मंजीर' गिरिजाकुमार का प्रथम काव्यसंग्रह है। इसकी भूमिका में महाकवि निराला ने लिखा है कि - " गिरिजाकुमार माथुर निकलते ही हिंदी की निगाह खींच लेनेवाले तारे है काव्य के आकाश से उनका बहुत ही मधुर रंगीन प्रकाश हिंदी धरातल पर उतरा है। बोलनेवाले तार की तरह मजबूत स्वर से मिले हुए अपनी झंकार से उन्होंने लोगों का दिल ले लिया। " [3]

इस काव्य संग्रह में कवि का स्वर रंग रोमांस और उससे उत्पन्न होनेवाली निराशा, वेदना और अवसाद का स्वर है। ये कविताएँ वे कविताएँ है जिसमें किशोर भावुक मन के स्वप्निल भाव शब्दों का जामा पहन कर आये हुअे दिखायी देते है। मूल स्वर प्रणय, भावुकता, निराशा और अवसाद का ही वस्तुतः 'मंजीर' का कवि आदर्शो की सतह पर खडा है। भीतर की जो उदासी है वह उसे गाने के लिए मजबूर करती है। वह जो कुछ गुनगुनाता है उसका एकमात्र अर्थ है - 'प्यार' प्रेम भाव की कविताओं में 'प्यार बडा निष्ठुर' अभी तो झूम रही है रात, 'विदा का समय', 'प्रेम से पहले' और देह की आवाज आदि प्रमुख है। इनमें प्रेम का जो आलंबन है वह अपनी कल्पना-क्रीडा न होकर धरती पर चलते-फिरते पात्र ही है। छायावादी स्वरों से सधी और नवीनता की और कदम बढती इन कविताओं में कवि नये शिल्प और नूतन भावबोध की और जाते द्वारे दिखायी देता है।

" रस बरसने वाले आकर
विष ही छोड गये जीवन में। " [4]

'मंजीर' की अधिक कविताओं में करूण गीर दुखद के दर्शन होता है। कही कही इस संग्रह की कविताएँ प्रिया के सौंदर्य की आक्रमक और मादक छबियाँ भी प्रस्तुत करता है।

" बडा काजल आँजा है आज
भरी आँखों में हल्की लाज
अधर पर धर क्या सोई रात
अजाने ही मेहंदी के हाथ
मला होगा केसर अंगराग
तभी पुकित चंपक-सा गात। " [5]

किंतु प्रणयजनित असफलता, निराशा, दुःख, भावों की व्यंजना इस संग्रह में अधिक मिलती है। प्रणय की स्थूल और मांसल व्यजना का कारण कवि का रोमानी स्वभाव है, न कि भूखें तन-मन का आकार है। उन्होंने जीवन के मधुर स्वप्नों को पूरी सूक्ष्मता के साथ प्रस्तुत किया है।

जब कवि लिखता है कि -

" गीत में प्रिय सीखता मैं शून्य हूँ चूपचूप रूदन से
इन उसासों का रहस्य मिला मुझे उस मधु-मिलन से। " [6]

प्रेमभाव की मधुर, मादक और अवसादमयी स्थितियों को शब्दाकार देता हुआ कवि प्रकृति के प्रति भी काफी अनुरक्त दिखायी देता है। प्रकृति के अनेक रूपों ने उसे मोहा है। एक स्थान पर वर्षा ऋतु नारी रूप में मानवीकृत होकर सामने आयी है।

" आई बरसात आज
गीली अलकों से वारि-बूँदे चुपाती हुई
झीनी झोलियों से मुक्त मुक्ता लुटाती हुई
कोयल सा श्यामल स्वर
भीगी अमराई से आता है पल-पलपर। " [7]

शिल्प के दृष्टि से भी ये रचनाएँ सरल, निश्चल और भोले मानस की छाया है। ये कविताएँ कुछ ऐसा संकेत भी देती है कि कवि नवीन शिल्प की और बढ रहा है। मुक्त छंद में बँधी नये अप्रस्तुओं से 'मंजीर' की कविताएँ आकर्षक प्रभावी और भवनापरक अधिक है।

तार-सप्तक : 1943

'तार-सप्तक' का प्रकाशन सन 1943 में हुआ। इसमें अज्ञेय ने सात कवियों की प्रतिनिधि रचनाएँ संकलित की थी जिनकों अज्ञेय ने ' नये प्रयोग ' कहा है और आलोचकों ने 'प्रयोगवादी काव्य'। यहाँ पर कवि गिरिजाकुमार माथुर 'तार-सप्तक' में संकलित प्रभाव से एकदम मुक्त और नयी भाव-शैली का प्रेणता बन गये। स्वयं किसी उसीने स्पष्ट कर दिया है - " प्रयोगों का लक्ष्य है - व्यापक सामाजिक सत्य के खंड अनुभवों का साधरणीकरण करने में कविता को भावानुकूल माध्यम देना। जिसमें व्यक्तिद्वारा इस व्यापक सत्य का सर्वबोधगम्य प्रेषण संभव हो सके। " [8]

तार-सप्तक के अंतर्गत आपकी " आज है केसर रंग रँगे बन', 'रूक कर जाती हुई रात',

A 11964

'चूडी का टुकडा', 'रेडियम की छाया', 'कुतुब के खण्डहर', 'पानी भरे बादल', 'क्वार की दोपहरी', 'भीगा दिन', 'एसोसिएशन', 'विजया दशमी' उक्त बारह कविताओं में कवि माथुर ने अत्यत मार्मिक मनोरंजक एवं आकर्षक वातावरण की सृष्टि की है।

' नाश और निर्माण ' 1946

इस काल-तक आते-आते कवि माथुरजी पर्याप्त अंशों में लोकप्रिय हो चुका था। इसका बडा कारण था - नये प्रयोगों से युक्त उसकी काव्य-रचनाएँ।

इस संग्रह के शीर्षक से ही स्पष्ट हो जाता है कि यह संग्रह मन के दुहरे मनःस्थिति का चित्रण है। इसकी अधिकांश कविताएँ छायावाद और प्रगतिवाद के संधिकाल की उपज है। माथुरजी के जीवन का एक पहर का परिचायक उसका नाश पक्ष है, तो दूसरे का उसका निर्माण पक्ष।

इसमें सन 1941 से 1945 इ.तक की कविताएँ संकलित है। यह संकलन ही वह स्त्रोत ग्रंथ है। जिसकी कविता की समर्थ पीठिका विद्यमान है। यद्यपि इससेपूर्व ही कवि नूतन प्रयोगों एवं नूतन शिल्प-विधान द्वारा हिंदी पाठकोंको एक नई दिशा प्रदान कर चुका था। इतना होते हुअ भी नाश और निर्माण का तो न सम्यक मूल्यांकन ही किया गया और न उसका यथेष्ट प्रचार ही हुआ लेकिन यह तो निर्विवाद सत्य है तो यह है कि 'नाश और निर्माण' के प्रकाशनने कवि के व्यक्तित्व को नया साज चढाया है।

इस संकलन में भी प्रणय के स्वर की प्रबलता है, विषाद एवं निराशा की प्रधानता है, अतीत की सुखद स्मृतियाँ है रोमानी भावों की दिव्य आभा है और प्रेम-निरूपण में वासना एवं भोग का पुट होते हुए भी चित्रण में नवीनता है, डॉ. नगेंद्रजी ने ठीक लिखा है - कि " इन कविताओं की आधारभूत अनुभूतियाँ अत्यंत सूक्ष्म और परिष्कृत होते हुए भी मूर्त और मांसल है। उनमें एक ओर छायावाद की अतीन्द्रिय श्रृंगार भावना का अभाव है और दूसरी ओर प्रगतिवादी की अनपढ स्थूलता भी नहीं है। रूप और रस के मांसल स्पर्श परिष्कृत कल्पना के संसर्ग से अत्यंत रमणीय बन गये है। यह श्रृंगार न तो भूखे तन और भूखे मन का आहार है और न किसी सदृश्य आलंबन के साथ कल्पना विहार है " [9] कवि ने जीवन की मधुर भावना को बडे ही हल्के हाथों से किंतु पुरी गहराई के साथ बिंबित करने का सफल प्रयत्न किया है।

कहने का तात्पर्य यहाँ है कि ' नाश और निर्माण ' की कविताओं में व्यक्त प्रेमिल मनोभाव वासना और भोग के पार्श्ववर्ती होते हुए भी अपनी मदिर नवीनता में अकेले है 'चूडी का टुकडा' और उसी तरह ही अनेक कविताओं को लिया जा सकता है।

" इस रंगीन साँझ में तुमने
पहने रेशम वस्त्र सजीले
भरी गोल गोरी कलाइयों में पहनी थी
नयन डोर-सी वे महीन रेशमी चूडियाँ
चंदन बाँह उठाने ही में
खिसक चली वे तरल गूँज से
-- रत्न कलश भर कर संपूर्ण सुधा रजनी की
आज यही रस डूबा चाँद बन गई हो तुम। " [10]

'नाश और निर्माण' की बहुत कविताओं का एक स्वर वह भी है जो आज की आर्थिक विषमता से अंकित है। अनेक कविताओं में मध्यवर्गीय मानस की आशा-आकांक्षाओं विपुलताओं-निराशाओं का अंकन भी मिलता है। कही अंसोत दिखायी देता है तो कही निम्न वर्गीय की विवशताओं का अंकन उच्च वर्ग की सुविधाओं को आमने-सामने रखकर किया गया है। यही वह भूमि है जहाँ से कवि का भावबोध नयी कविता की और अग्रसर होता दिखायी देत है। माथुरजी ने अपनी 'मशीन का पूर्जा' 'शाम की धूप', 'टाइफाइड' जैसी कविताओं में मध्यमवर्गीय जिंदगी के यथार्थ को बडे सफलता से चित्रित किया है। 'मशीन की पूर्जा में एक और उच्च वैभव का चित्रण है तो दूसरी ओर कम आमदनी वाले क्लर्क की दैनंदिनी सीधी सरल भाषा में करूणा से लिखी है। जैसे -

" शीत हवा में ठंडे सात बजे है
ठिठुरन से सूरज की गर्मी जमी हुई है
सारा नगर लिहाफों में सिकुडा सोता है
पर वह मजबूरी से कँपता उठ आया है
रफू किया उसका वह स्वैटर
तीन सर्दियाँ देख चुका है
उसका जीवन जीवनहीन मशीन बन गया।
जाडों के दिन की मिठास
अब जहर हुई है। " [11]

आर्थिक अभावों और तन्नित पीडा और विवशता के चित्र भी इन कविताओं में मिलते है। इसी कारण कवि की नजर एक और तो उच्च वर्गीय व्यक्तियों की और घूमता है और उसमें 'ड्रेस-बूट' की गंध साड्रियों की मृदु सरसर। चम्मच प्लेटों की हल्की मीठी टनकारे आदि दिखायी देती

है तो दूसरी ओर अखबार की वह खबर भी प्रतिबंबत होती है जो यह सूचना दे रही है कि 'कलकत्ते के फुटपाथों पर दो सौ भूख मर गये। "

पीडितों और अभावों में पल रहे जीवन पर कडवा जल छिडकता हुआ कवि एक स्थानपर तो यह भी लिख गया है कि,

" को को जम में तले परौंठे के ही बलपर
वह दिमाग का बोझा ढोता
और साथ में
क्षय-सा काला नाग-पालता रक्त पिलाकर। " [12]

इसप्रकार स्पष्ट हो जाता है कि माथुर का यह संग्रह उनकी विकासत होती हुई काव्य चेतना की साक्ष है। प्रेम, रंग, रूप और अवसाद आदि के चित्र खींचता हुआ भी? माथुरजी सामाजिक विषमता, आर्थिक अभावों से ग्रसित जिंदगी और निम्न मध्यवर्ग की वेदना को खडा कर देता है।

वैसे तो इसी काव्यसंग्रह से कवि नयी कविता की और बढती दिखायी देता है। शिल्प के क्षेत्र में तो नाथुरजी 'मंजीर' काल में ही प्रयोगाग्रही था, किंतु 'नाश और निर्माण' में उसकी नूतन शिल्प-सज्जा खासी स्पष्ट होती है। अप्रस्तुत चयन में नवीनता, शब्द प्रयोगों में सतर्कता और मुक्त छंद का सफल प्रयोगों के कारण माथुर का काव्य प्रयोगशीलता की ओर बढता गया है। 'नाश और निर्माण' की कविताओं में मुक्त छंद का सफल प्रयोग हुआ है और कुछ कविताओं में तो कवि ने सर्वय को तोडकर एक नवीन छंद का निर्माण भी किया है। 'वसंत की रात' ऐसी ही कविता है। छंद प्रयोग की दृष्टि से उनके प्रगीत भी अविस्मरणीय है जिनमें परंपरागत व्यंजन तुकांत प्रस्तुत किए गए है। स्पष्ट ही हो गया है माथुरजी का यह काव्य संग्रह विकसित काव्य-चेतना का परिचायक है। 'तार-सप्तक' की कविताओं को इसी संग्रह में स्थान मिला है।

धुप के धान :-

इ.स. 1955 में आपका तीसरा काव्य संग्रह 'धूप के धान' प्रकाशित हुआ और इसे नई कविता की एक श्रेष्ठ उपलब्धि मानी जाती है इसमें 45 कविताएँ संकलित है। जो 1946 से 1955 इ. तक लगभग 9-10 वर्षों के बीच में लिखी गई है।

'धूप के धान' की भूमिका में आपने लिखा है - ' प्रस्तुत कविता-संग्रह पिछले नौ-दस वर्षो की मेरी चुनी हुई रचनाओं का संकलन है। इन वर्षो में हिंदी की नयी कविता पनपी और बढ़ी है उसका सुकुमार पौधा जनवाणी और जनाश्रित भित्तियों से रस लेकर बलवत्तर हुआ है उसकी शाखाएँ फैली है और काव्य-क्षेत्र में अब वह गरिमा तथा प्रतिष्ठा की और अग्रेसर होगा ऐसा निश्चित है। हर नयी चीज की तरह हमारी नयी कविता के सम्मुख भी गंभीर समस्यायें रही है। नये कवि ने साहस के साथ उनका सामना किया है और अपने यत्नों में वह अत्यंत सफल होगा यह हमारा विश्वास है। यदि उसमें यह शक्ति न होती तो उसके ये प्रयत्न एकाकी और एकांतिक रहकर कभी के समाप्त हो गये होते यह नयी कविता के उज्जवल और जीवंत पक्ष का ही प्रमाण है " [13] इसप्रकार धुप के धान में कवि स्पष्ट रूप से नयी कविता-धारा का समर्थक एवं प्रवर्तक दिखायी देता है। इस संकलन की कविताओं को तीन भागों में विभाजित किया ज सकता है। एक तो रूमनी गीतात्मक कवितायें दूसरी यथार्थ और रूमान के समन्वयवादी कविताये तथा तीसरी मानवतावादी बर्हिमुखी भावधारा संबंधी कविताएँ हमें दिखायी देती है।

कवि के शब्दों में

" अंगार बन गया आदि पूर्व सदियों का धूँधला जम्बुदीप
श्यामल कृतांत जा धरा उठी लेकर जीवन का अग्निदीप

नयनों में अग्नि शिखाएँ मुखपर मानवता का चंदन
जनता जनार्दन आज बढी करने आजादि का बंदना

ओ मनुज दासता है प्रहरी वह देख दुर्ग जलता तेरा
धू, धू जलते अस्त्र-वस्त्र जलकर गिरता जंगी घेरा
मुड गये समय के चपल-चरण आया कृंतात ब मुक्तिकाल
मिट्‌टी का हर कन सुलग उठा जल उठी एशिया की मशाल। " [13]

इसमें कवि माथुर की मानवतावादी भावधारा का ही प्रत्यक्ष दर्शन होता है। मानवतावाद ही उनकी अनेक कविताओं का प्राणतत्व बनकर न केवल उन्हें निखार सका अतः उसमें उनकी अक्षय कीर्ति भी प्रदान कर सका है। 'धूप के धान' में आग और फूल, धरा दीप, तथा नींव रखनेवाली का गीत आदि कविताएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

" वह भूमि किंतु न मिट सकी
आगत फसल की राह में
वह फूल मुरझाया नहीं
वह अग्नि बीजों को सतत बोती रही
फिर से नया सूरज उगाने के लिए। " [14]

अतः कवि माथुर की कविताओं में हमें बहुधा नूतनभाव बोध के ही दर्शन होते है और समान विषयों में लिखी गयी उसकी कविताओं में हमें उनकी नवीनता दिखायी देती है। इस दृष्टि से धूप के धान की ' पंद्रह अगस्त ' यह कविता उल्लेखनीय है और कवि माथुर को देश की स्वतंत्रता की प्रसन्नता से अधिक चिंता देश नव निर्माण की है, साथ ही वह अनुभव करता है कि आजादी के कारण हम सब देशवासियों पर एक नवीन दायित्व आ गया है।

" इसलिए कवि कहता है
आज जीत की रात
पहरूए, सावधान रहना
खुले देश के द्वार
अचल दीपक समान रहना। " [15]

वैसे अगर हम देखे तो 'धूप के धान' में हमें सर्वाधिक कविताओं की संख्या प्रकृति संबंधी कविताओं की दिखाई देती है। अपने कविताओं में कवि ने सिर्फ अपने देश के प्रकृति की ही नहीं तो विदेश की प्रकृति के सौंदर्य का भी चित्रण किया है। और सौंदर्य का चित्रण मन की कोमल भावनाओं को भर देता है। कवि माथुरजी प्राकृतिक कविताओं में वातावरण का चित्रण बडी पटुता और सुक्ष्मता से करते है तथा ऐसे स्थलों पर परिस्थिति के अनुसार रूप, रंग, गंध और स्पर्श की चेतनाओं को अहिस्ते-अहिस्ते उभारते चलते है। उदा - तंट की रात कविता की कुछ पंक्तियाँ,

" साँझ की सुधि में
हँसी सी आ गयी होगी
बर्फ की पहली रूई भी
छा गई होगी
-- चाँद के संग दूर की
वह रात आती है

चाँदनी हल्के कुहर के
साथ आता है। " [16]

" 'सायंकाल' कविता से
सूरज डूब गया धरती का सायंकाल हुआ
काल पुरूष मिट गया, धरा का सूना माल हुआ
आदि ज्योति उठ गयी आज
मिट्टी के घेरे पार
युग की अक्षय आत्मा सिमटी
बनी एक चित्कार । " [17]

कुछ कविताओं में रोमान तथा यथार्थ का समन्वय किया गया है किंतु यथार्थ की अपेक्षा रोमान का ही भारी रहा है

" नयन लालिम स्नेह दीपित
भुज मिलन तन गंध सुरभित
उस मुकीले वक्ष की। " [18]

फिर भी इन कविताओं में निराशा कुण्ठा, वेदना, आदि के चित्र उतने नहीं जितने कि उनसे उत्पन्न थकान उब, सूनेपन और आलस्य है। वास्तव में यहाँ आते-आते कवि अपनी वैयक्तिक अनुभूतियों से उपर उठकर अधिकाधिक सामाजिक होता चला गया है। प्रौढ रोमांस में उसने यह स्वीकार किया है कि मन के संघर्षो से अधिक बोझिल संघर्ष बाहर के होते है।

" हम को भी है ज्ञान विरह का
और मिलन का
यह मत समझों बरफ बन गया हृदय हमारा
पर हम तुमसे भिन्न बहुत है
हम मन में सुधि रखकर भी है कर्मशील
है संघर्षो में डूबे भले
हम डटकर जीवन से युद्ध कर रहे प्रतिपल
आज हमारे सममुख और समस्याएँ है। प्रश्न दूसरें
घर के बाहर के, समाज के

मुल्क और दीगर मुल्कों के
अब हमकों सुधि की पीडा है नहीं सताती। " [19]

अथवा :-

हमने भी सोचा था पहले
इस जीवन में
सबसे अधिक मूल्य होता कोमल भावों का
पर ठोकर पर ठोकर खाकर हमने जाना
मन के संघर्षों से बाहर के संघर्ष अधिक बोझिल है। " [20]

इससे ऐसा लगता है कि वह मन की गहराइयों में रचे बसे प्यार की तुलना में उसे अब सामाजिक जीवन के संघर्ष और मूल्य अधिक अनिवार्य लगते है।

'धुप के धान' यह संकलन शिल्प की दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण है। क्यों कि इसकी भाषा, छंद, संगीतात्मकता, नूतन बिंब-योजना नये-नये उपमान नये-नये प्रतीक तथा नूतन आलंकारिकता आदि शिल्प सौंदर्य से यह संकलन पृष्ठ है।

कवि माथुर क्री कविताओं के कटु समीक्षक डॉ. शिवकुकार मिश्र ने अपने शोध प्रबंध ' नया हिंदी काव्य ' में ' धूप के धान ' का परिचय देते हुए यही कहाँ है - प्रेम, सौंदर्य, रंग, रस और रोमान के प्रति आसक्ति यहाँ भी है, तथा आशावादिता मानव जीवन और भविष्य के प्रति उसका अखंड विश्वास तथा सामाजिक चेतना की प्रखर अनुभूति भी परंतु यहाँ इन सबके समन्वित रूप के दर्शक अधिक होते है कवि का अनुभव क्षेत्र यहाँ विस्तृत है और उसकी दृष्टि भी व्यापक उसके स्वरों में भी पिछले आक्रोश और तिक्ता के स्थान पर संयम और दृढता है। लगता है जैसे कवि अपने रूकने के लिए एक समतल भूमि पा गया है।

डॉ. कैलाश वाजपेयी के कथना नुसार - " भावपक्ष के सदृश्य 'धूप के धान' की कविताओं का कलापक्ष भी पूर्ण समक्ष और समृद्ध है। " [21]

अतः हम कह सकते है, 'धूप के धान' की सभी रचनाओं का अपना विशिष्ट व्यक्तित्व है जिसमें एक और जहाँ शिल्प प्रयोगों (विशेषकर उपमान, रंग-योजना, ध्वनि, संगीत नये प्रतीक के साथ सामाजिक वस्तु के सामांजस्य का एक सफल प्रयत्न मिलेगा वही दूसरी और आगत फसल की अनिमेय प्रतीक्षा भी मिलेगी।

' छाया, मत छुना मन ' 1961

' छाया मत छूना मन ' काव्य संग्रह के गीतों में काव्य तत्व के साथ-साथ संगीतमयता भी है जो शब्दों से सही कम - संयोजन से स्वतः प्राप्त हो जाता है। पहली रचना ' याद यह हो आई मुझको पुराना ' या ' सेजों पे ना जाना निंदियाँ कुमारी ' में भी नया ताजा प्रयोग मिलता है। अनेक गीतों में फैंटसी शिल्प का प्रयोग किया है। जैसे,

" पलकों से कुहू उडी छा गयी
चित्र डूबे
हुए दिपनार। " [22]

स्वयं गिरिजाकुमार माथुरजी का कहना है - " मेरे गीतो में यांत्रिक ढंग से छंद की आवृत्ति नहीं है। कथ्य की जरूरत के अनुसार छंद तोड दिया है, शब्द गढ गये है लय लम्बी हो गयी है। मैंने स्वर-ध्वनि के तुकांत लिए है, कही-कही व्यंजन ध्वनियों के समान शब्दों से तुकान्त और लयवत्ता उत्पन्न की है जैसे - 'हरी धूप की किरन सी लता में'। इस तरह अपने गीत को प्रचलित जमीन से मैंने अलग रखा है, कुछ गीतों में विदेश के अनुभव है - 'कार्तिक की पंचमी' तथा ये अधूरे चाँद का ऐपन, 'रंगा मंडल', 'गौर माथे पर गिरे उड चंपई कुंतल - चंपई कुंतल चाँद के ऐपन रंगे मंडल के साथ मिलकर विदेशी सुनहरे बालों का चित्र उपस्थित करता है। गीत में जितनी उहन अभिव्यक्ति होगी उतना ही वह प्रभावी होगा और उतनी ही गहराई से भाव सत्य को सामने लाने में समर्थ होगी। " [23]

' शिला पंख चमकीले ' 1961

सन 1961 में यह आपका चतुर्थ काव्य संकलन 'शिला पंख चमकीले' यह प्रकाशित हुआ इस संकलन में आपकी 38 कविताऐं संकलित है। यहाँ कवि ने 1955 से 1960 तक की कविताओं का समावेश किया गया है। 1960 तक नयी कविता अपना एक विशिष्ट स्थान बना चुकी थी। अतः कवि को इस संकलन की भूमिका में कुछ अधिक कहने या लिखने की आवश्यकता नहीं रही है। इसी कारण उसने प्रक्रिया शीर्षक के अंतर्गत केवल ढाई पृष्ठों में अपने विचार व्यक्त किये है।

प्रस्तुत काव्य कृति विचार प्रधान है। इसमें भावना के स्थानपर चिंतन का प्राधान्य पाया जाता है। माथुरजी की दृष्टि फुटपाथ, कच्चे घरों, बंगलों सभी पर गई है वह देखता

है मनुष्य कही दरिद्रता से घिरा है कही अंधविश्वास से कही कृत्रिमता से वह सृजन भी करता है, विनाश भी।

प्रस्तुत रचना भी कवि की स्वतंत्र कविताओं का संकलन है, जिसमें डॉ.कैलाश वाजपेयी के शब्दों में -

" एक और 'खट्टामिठ्ठी चाँदनी' जैसी लघु प्रगीत रचनाएँ है वही दूसरी और 'हब्श देश' जैसी उदात्त शैली से लिखी लंबी ऐतिहासिक कविताएँ भी। " [24]

कवि मानव के दुहरे व्यक्तित्व के बनावटी चेहरों को समाप्त करके संशय, भय, नफरत, आदि के कृत्रिम भेद-भावों को समूल नष्ट करना चाहता है। उसका विश्वास है कि मानव सूर्य के समान दीप्तव्यक्ति से संपन्न होगा, अन्यायों और अत्याचारों के स्थान पर मानवीय मूल्यों में उसकी आस्था बढेगी। इसलिए वह आधुनिक मानव को नया ताप, नयी तपन देना चाहता है।

" दुहरे व्यक्तित्वों के
चेहरे कर भस्मसात
संशय, भय, नफरत की
भेद झिलिलयाँ विराट
निकलेगा व्यक्ति नया

इन्सानी मूल्यों के जल सोन-तार नये
जीवन को फिर विराट गीत का अलाप दो
अग्नि दो, तपन दो, नया ताप दो। " [25]

निष्कर्ष :-

गिरिजा कुमार माथुर के जीवनवृत्त, व्यक्तित्व और कृतित्व से उनके अंत:साक्ष्य पर रोशनी पडती है। माथुरजी के व्यक्तित्व से ही कृतित्व को परखना आसान होता है।

गिरिजा कुमार माथुर के काव्य पर अध्ययन करते समय नजर के सामने यह आ गया कि उनकी एक एक कविता दो-दो काव्यसंग्रह में परिवितीत हो गयी है सिर्फ उस कविताओं के शिर्षक बदल दिये है लेकिन काव्यपंक्तियाँ वही है, उदा- 'मंजीर' काव्यसंग्रह की अभी तो झूम रही है रात, विदागान, रूढ हो गये वरदान प्यार बडा निष्ठुर था आदि कविताएँ उनका काव्यसंग्रह छाया मत छूना

मन में दूबारा परिवर्तित हो गयी है, तो 'नाश और निर्माण' की कविताएँ 'तार सप्तक' में सब की सब संकलीत है। तो 'धूप के धान' की अनेक कविताएँ उदा - 'सॉवन के बादल', 'न्यूयॉर्क की एक शाम', 'सिंधु तट की रात', 'हेमती पूनो', 'ऋतु-चित्र' आदि कविताएँ। उनका चौथा काव्यसंग्रह 'छाया मत छुना मन' में दूबारा परिवर्तित हो गयी है, तो 'नाश और निर्माण' की 'कौन थकान हरे जीवन की', यह कविता 'छाया मत छुना मन' में 'थकी हुई मंजिल' नामसे परिवर्तित हुई है।

तो 'छाया मत छूना मन' काव्यसंग्रह की अनेक कविताएँ 'शिला पंख चमकीले' नामक काव्यसंग्रह में परिवर्तित हो गयी है, जैसे, सूरज का पहिया, 'अनकही बात', 'वसंत', एक प्रगीत, भूले हुओं का गीत, खट्टीमिठ्ठी चाँदनी, आदि कविताएँ और भी अनेक कविताएँ दूबारा परिवर्तित हो गयी है।

संदर्भ

अध्याय - 2

1) आज के लोकप्रिय हिंदी कवि - माथुर पृ. 3
2) गिरिजाकुमार माथुर के काव्य की बनावट और बनावट पृ. 18
3) हिंदी वही पृ. 19
4) आज के लोकप्रिय हिंदी कवि - माथुर पृ. 9
5) छाया मत छूना मन पृ. 58
6) वही पृ. 28
7) मंजीर पृ. 17
8) वही पृ. 25
9) तार-सप्तक - वक्तव्य - माथुर पृ. 151
10) नाश और निर्माण पृ. 57
11) आज के लोकप्रिय हिंदी कवि - माथुर पृ. 48
12) वही पृ. 48
13) वही पृ. 48,49
14) धूप के धान भूमिका - माथुर पृ. 15, 8
15) वही पृ. 8, 9, 14
16) वही पृ. 47
17) वही पृ. 35
18) वही पृ. 68
19) वही पृ. 40
20) वही पृ. 49
21) वही पृ. 21, 22
22) वही पृ. 21
23) आज के लोकप्रिय कवि - माथुर पृ. 19
24) छाया मत छूना मन पृ. 17
25) आज के लोकप्रिय हिंदी कवि - माथुर पृ. 35
26) शिला पंख चमकीले - पृ. 85